• व्रत...

वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी

कृष्ण और शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को भगवान गणेश की पूजा के लिए विशेष माना जाता है। कहा जाता है कि इस तिथि पर बप्पा की पूजा का सार्थक फल भक्तों को मिलता है. वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी की तारीख करीब आ रही है। ऐसे तो साल में 12 विनायक चतुर्थी और 12 संकष्टी चतुर्थियां होती हैं। लेकिन कार्तिक महीने में पड़ने वाली चतुर्थी को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। बता रहे हैं कि 2024 की वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी कब है और इस दिन पूजा के विधि-विधान समेत शुभ मुहूर्त क्या हैं। हिंदू पंचांग की मानें तो हर महीने की चौथी तिथि को भगगान गणेश को समर्पित माना जाता है। कहा जाता है कि इस दिन भगवान गणेश की पूजा करने का भक्तों को बेहद शुभ लाभ मिलता है। इस दिन लोग भगवान गणेश के नाम का व्रत भी रखते हैं। वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी की तारीख की बात करें तो 20 अक्टूबर 2024 को वक्रतुंड संकष्टी चतुर्थी मनाई जाएगी। खास बात ये है कि 2024 को करवा चौथ के व्रत के दिन ही संकष्टी चतुर्थी मनाई जाती है।

संकष्टी चतुर्थी के दिन गणेश वंदना और गणेश चालीसा का पाठ करने से इंसान के दुख-दर्द दूर होते

हैं। इस दिन सुबह नहा-धोकर भगवान की पूजा करने का महत्व है। उन्हें गेंदे का फूल चढ़ाना शुभ माना जाता है। इसके अलावा इस दिन अगर गणेश भगवान की पूजा के दौरान उन्हें सिंदूर चढ़ाएं तो इसका भी काफी महत्व माना जाता है। सिंदूर हमेशा से ही गणेश भगवान का प्रिय रहा है। इसके अलावा इस दिन शमी के पेड़ की पूजा करने का विशेष फायदा होता है। कहा जाता है कि शमी का पेड़ गणेश जी का पसंदीदा है। इस दिन अगर शमी के पेड़ के पत्ते उन्हें अर्पित किए जाएं तो भगवान खुश होते हैं और भक्तों के सारे कष्टों को वे हर लेते हैं।

वक्रतुंड संकष्टी 2024 की शुरुआत 20 अक्टूबर 2024 को सुबह 06 बजकर 46 मिनट से होगी और इसका समापन अगले दिन 21 अक्टूबर 2024 को सुबह 04 बजकर 16 मिनट पर होगी। इस दौरान चंद्रोदय के समय की बात करें तो इसका समय रात को 07 बजकर 54 मिनट का है।

इस बार 20 अक्टूबर 2024 के दिन वक्रतुंड संकष्टी पड़ रही है। इस तारीख को ही करवा चौथ का व्रत भी रखा जाएगा। करवा चौथ पर महिलाएं अपने पतियों की लंबी आयु और बेहतर स्वास्थ्य के लिए व्रत रखती हैं। इसे अखंड सौभाग्यवती व्रत के तौर पर भी जाना जाता है।

• पूजा...

भगवान शिव के वाहन नंदी

नंदी को भगवान शिव का सबसे प्रिय गण माना जाता है। कहते हैं कि जहां भगवान शिव वहां उनके वाहन नंदी होते हैं। इसके अलावा मान्यता यह है कि अगर आपकी कोई इच्छा है तो उसे आप नंदी जी के कानों में कह दें तो वह भगवान शिव के पास पहुंच जाती है। शिवालय में भोलेनाथ की मूर्ति के सामने बैल रूपी नंदी जरुर विराजित होते हैं।

नंदी को भगवान शिव के निवास स्थान कैलाश का द्वारपाल कहा जाता है। वह शिवजी के वाहन होने के साथ उनके सबसे प्रिय भक्त भी हैं। नंदी को शक्ति-संपन्नता और कर्मठता का प्रतीक माना जाता है।

कथा के अनुसार, प्राचीन काल में शिलाद नाम के एक ऋषि थे, जिन्होंने कठोर तपस्या कर भगवान शिव से वरदान में नंदी को पुत्र रूप में पाया था। उसके बाद ऋषि शिलाद ने नंदी को वेद-पुराण सभी का ज्ञान दिया।

कैसे बने शिव के वाहन-पौराणिक कथा के अनुसार, एक बार ऋषि शिलाद के आश्रम में दो संत आए और पिता के आदेश पर नंदी जी ने उनकी खूब सेवा की जब वह संत जाने लगे तो उन्होंने ऋषि शिलाद को दीर्घायु की आशीर्वाद दिया, लेकिन नंदी के लिए कुछ नहीं कहा। यह देख ऋषि शिलाद ने सन्यासियों से इसकी वजह पूछी, तो उन्होंने बताया कि नंदी अल्पायु है। अपने पुत्र के लिए ऐसी बातें सुनकर ऋषि शिलाद चिंतित हो गए, तब नंदी ने उन्हें समझाते हुए कहा कि पिताजी आपने मुझे शिव जी की कृपा से पाया है, तो वो ही मेरी रक्षा करेंगे। इसके बाद नंदी ने शंकर जी का निमित्त कठोर तप किया, नंदी की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव प्रकट हुए और उन्हें अपना वाहन बना लिया।

शिवजी की ओर क्यों होता है नंदी का मुख-दुनियाभर के शिव मंदिरों में भगवान शिव के सामने नंदी जी विराजमान होते हैं। सभी जगहों पर नंदी जी भगवान शिव की ओर मुख करके बैठे होते हैं। नंदी जी की यह मुद्रा उनके भोलेनाथ के प्रति अटूट ध्यान और भक्ति का प्रतीक है। उनका ध्यान सिर्फ उनके आराध्य पर केंद्रित रहता है।

नंदी के कानों में क्यों बोलते हैं मनोकामना-धार्मिक मान्यता के अनुसार, नंदी जी के कानों में लोग अपनी मनोकामना इसलिए कहते हैं, क्योंकि भगवान शिव अक्सर तपस्या में लीन रहते हैं। ऐसे में नंदी भक्तों की मनोकामनाएं सुनते हैं और शिव जी तपस्या पूरी होने पर भक्तों की मनोकामनाएं उन्हें बताते हैं।

अहोई अष्टमी व्रत

जहां करवा चौथ के दिन चंद्रमा को देखकर अर्घ दिया जाता है वही अहोई अष्टमी के तारों को देखकर अर्घ देने की परंपरा है। मान्यता है की अहोई अष्टमी के दिन अनगिनत तारों को देखकर पूजा करने से कुल में अनगिनत संतान होती है। इस व्रत में माताएं पूजा के दौरान मां पार्वती से प्रार्थना करती हैं कि जिस तरह आसमान में तारे हमेशा चमकते रहते हैं उसी तरह हमारे कुल में जन्मी संतानों का भविष्य भी इसी तरह चमकता रहे...

हिंदू धर्म में अहोई अष्टमी का व्रत बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। यह व्रत व्रत कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को रखा जाता है। इस दिन माताएं अपनी संतान की लंबी आयु और तरक्की के लिए व्रत रखती है। यह व्रत बहुत ही कठिन और महत्वपूर्ण माना जाता है। अहोई अष्टमी के दिन महिलाएं निर्जला व्रत रखती है। इस व्रत में मां पार्वती के अहोई स्वरूप की पूजा की जाती है। उसके बाद चंद्राम और तारों को देखकर अर्ध देने के बाद ही व्रत खोलती है।

वैदिक पंचांग के अनुसार, अहोई अष्टमी तिथि की शुरुआत गुरुवार 24 अक्टूबर रात 1 बजकर 18 मिनट पर होगी और अष्टमी तिथि का समापन शुक्रवार 25 अक्टूबर रात 1 बजकर 58 मिनट पर होगा। उदय तिथि के अनुसार अहोई अष्टमी का व्रत गुरुवार 24 अक्टूबर 2024 को रखा जाएगा।

हिंदू पंचांग के अनुसार, अहोई अष्टमी की दिन पूजा का शुभ मुहूर्त शाम 5 बजकर 42 में से लेकर शाम 6 बजकर 59 मिनट तक रहेगा। अहोई अष्टमी की पूजा करने के लिए कुल 1 घंटा 17 मिनट का समय मिलेगा।

● **अहोई अष्टमी पर तारों को अर्घ**-जहां करवा चौथ के दिन चंद्रमा को देखकर अर्घ दिया जाता है वही अहोई अष्टमी के तारों को देखकर अर्घ देने की परंपरा है। मान्यता है की अहोई अष्टमी के दिन अनगिनत तारों को देखकर पूजा करने से कुल में अनगिनत संतान होती है। इस व्रत में माताएं पूजा के दौरान मां पार्वती से प्रार्थना करती हैं कि जिस तरह आसमान में तारे हमेशा चमकते रहते हैं उसी तरह हमारे कुल में जन्मी संतानों का भविष्य भी इसी तरह चमकता रहे। इसके अलावा यह भी मान्यता है कि आसमान के सभी तारें अहोई माता की संतान हैं। इसलिए तारों को अर्घ दिए बिना अहोई अष्टमी का व्रत पूरा नहीं माना जाता है।

● **अहोई अष्टमी व्रत का महत्व** -अहोई अष्टमी के दिन महिलाएं बिना अन्न जल ग्रहण किए प व्रत का पालन करती हैं। इसके बाद शाम को तारे देखने और अर्घ देने के बाद व्रत का पारण किया जाता है। मान्यता है जो भी माताएं इस व्रत का पूरे श्रद्धा और विधि विधान से पालन करती है मां अहोई उनकी संतान को लंबी आयु और सफलता का वरदान देती हैं।

● **अहोई अष्टमी का व्रत संतान के अच्छे स्वास्थ्य और सुख**-समृद्धि के लिए किया जाता है। इस दिन पीपल के पेड़ की पूजा का भी विशेष महत्व बताया गया है। बता दें, पीपल के पेड़ पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश का वास माना जाता है। इसलिए अहोई अष्टमी के दिन पीपल के पेड़ की पूजा खास रूप से करनी चाहिए। ऐसा कहा जाता है कि इस पेड़ की पूजा करने से दंपत्ति को संतान सुख का आशीर्वाद मिलता है और संतान के जीवन में कभी भी कोई परेशानी नहीं आती है।

● तुलसी को बेहद पवित्र माना गया है। इसलिए अहोई अष्टमी के दिन तुलसी की पूजा करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। साथ ही संतान के जीवन में आ रही समस्याएं दूर हो जाती है। इसके अलावा अगर आप इस दिन तुलसी की पूजा कर रही हैं, तो संध्या के समय विधिवत रूप से करें। ■ **पं. कुलदीप शास्त्री**

• वास्तु...

घर में ना रखें

यदि आपके घर या मंदिर में किसी देवी-देवता की खंडित मूर्ति विराजमान है, तो उसे दिवाली पहले ही नदी या तालाब में विसर्जित कर दें। वास्तु के अनुसार, घर में खंडित मूर्ति को रखना शुभ नहीं माना जाता है। यह मूर्तियां जातक के जीवन का दुर्भाग्य की वजह बन सकती हैं। घर में जंग लगा लोहे के सामान को नहीं रखना चाहिए। इस तरह का सामान को समय से पहले ही बाहर कर दें। माना जाता है कि घर में इस तरह के सामान को रखने से नकारात्मक असर पड़ सकता है। इसके अलावा बेकार फर्नीचर जैसे कि मेज, कुर्सी या टेबल को घर में रखने से बचना चाहिए। अगर आपने जूते की अलमारी में फटे-पुराने जूते चप्पल रखें हुए हैं, तो दीवाली की सफाई करते समय इन्हें घर से बाहर करें। वास्तु के अनुसार, फटे-पुराने जूते चप्पल को घर में रखने से परिवार के सदस्यों को दुर्भाग्य का सामना करना पड़ सकता है।

• तुलसी...

अगर आप घर में सुख-समृद्धि का वास चाहते हैं, तो तुलसी को घर की उत्तर दिशा में लगाएं। ऐसा करने से जातक के जीवन में खुशियों का आगमन होगा। इसके अलावा तुलसी को लगाने के लिए घर की पूर्व दिशा को शुभ माना जाता है। इस दिशा में तुलसी को लगाने से धन-वैभव में वृद्धि होगी। वहीं, इस पौधे को पूर्व दिशा में भी लगा सकते हैं। इससे परिवार में खुशहाली आती है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित